कोलाम जनजाति के सांस्कृतिक गीतों का हिंदी अनुवाद और विश्लेषण’

‘Hindi Translation and Analysis of Kolam Tribes Cultural Songs’

अनुवाद अध्ययन विभाग में एमउपाधि की आंशिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत .फिल.

लघु शोध प्रबंध

शोध सार

सत्र-2015-16

शोधार्थी

नर्मदा संजयसिंह ठाकुर

पं. सं. 2015/04/219/005

अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा (महाराष्ट्र)442001

,1997 संसद द्वारा पारित अधिनियम) क्रमांक के अंतर्गत स्थापित 3 केंद्रीय विश्वविद्यालय(

पोस्ट गांधी हिल्स ,हिंदी विश्वविद्यालय :, वर्धा –442001 भारत (महाराष्ट्र)

कोलाम जनजाति के सांस्कृतिक गीतों का हिंदी अनुवाद और विश्लेषण

प्रस्तुतकर्ता

नर्मदा संजयसिंह ठाकुर

एम. फिल. अनुवाद अध्ययन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा-442 005 महाराष्ट्र (भारत)

thakurnarmada@gmail.com cell-+9665091906

शोध सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में आदिवासियों का निवास रहा है। ये लोग जंगल, पहाड़, मरुस्थल तथा द्वीपों में रहते है। इनका रहन-सहन, खान-पान, संस्कृति, वेशभूषा, भाषा आदि सरल होती है। इनका जीवन सीधा-सादा होता है। कोलाम जनजाति का मुख्य निवास महाराष्ट्र तथा आंध्रप्रदेश के सीमांत प्रांतों में है। महाराष्ट्र में यवतमाल, चंद्रपुर, गडचिरोली, नांदेड आदि जिलों में पाई जाती है। इनकी कोई उपजाति न होने के कारण यह सलग जनजाति है। यह प्रकृति प्रदत्त होते हैं। इनके सभी क्रिया-कलाप प्रकृति पर आधारित होते है। प्रकृति को अपना भगवान मानते है। ये लोग जंगल में रहकर जंगल में पाए जाने वाले बांस, लकड़ी, घास, पूस, पत्ती का उपयोग करके कुटिया, झोपडी तथा घर बनाते हैं। इन सबका उपयोग करके घर में उपयोग करनेवाले विभिन्न वस्तुएँ बनाते है, जैसे-चटाई, खटिया, टोकरी और रस्सी आदि। आदिवासियों में गोंदना गोंदवाना आम बात है। वैसे ही कोलाम जनजाति भी गोंदना गोंदवाते है। इसमें चाँद, सूरज, तुलसी, वृंदावन, गौरी, बजरंगबली, बिच्छु, बनियान का पेड़, पांच महिलाएँ दूध ले जाती हुई, देवी और देवताओं की मूर्तियाँ आदि शामिल है। कोलाम जनजाति के लोग जादू में विश्वास करते हैं। जादू का उपयोग दुश्मनों की हत्या तथा उन्हें परेशान करने के लिए करते है।

संस्कृति के बिना समाज नहीं होता है। क्योंकि संस्कृति और समाज एक-दूसरे के पूरक है। समाज से ही संस्कृति का जन्म होता है। हिंदुओं की जैसी संस्कृति है वैसे ही कोलाम जनजाति के लोगों की भी संस्कृति है। सभी आदिवासियों की संस्कृति मिलती-जुलती है। लेकिन हिंदू और मुस्लिम की तुलना में अलग होती है। इनके कुछ त्योहार भी भिन्न होते है। हिंदू के संपर्क में आने से हिंदू के कुछ त्योहार मनाने लगे है। इनका मुख्य त्योहार 'गाँव बांधनी त्योहार' है। इस त्योहार में सभी लोग उपस्थित रहते है। इस त्योहार को बड़े धूम-धाम से मनाते है। इन त्योहारों को मनाते समय गीत गाए जाते है। दिन भर थकान तथा

कष्टों को भूलने के लिए गीत गाते है। कष्टों, विघ्नों तथा असफलताओं पर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गीत गाते है और सुख एवं शांति प्राप्त करते है। इनकी संस्कृति तथा त्योहारों पर गाए जाने वाले गीतों को अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा में लाने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य के माध्यम से इनकी संस्कृति, इनकी विशेषताएँ, इनके त्योहार और त्योहारों पर गाए जाने वाले गीतों को अनुवाद तथा विश्लेषण के माध्यम से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

इस लघु शोध कार्य का उद्देश्य यह है कि कोलाम जनजाति के लोगों की संस्कृति, त्योहार और त्योहारों पे गाए जाने वाले गीतों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। कोलाम जनजाति के सांस्कृतिक गीतों को मराठी और हिंदी भाषा में अनुवाद करके इन भाषाओं में लाने का प्रयास किया गया है। इनकी विशेषताओं को अवगत कराना और उनके सांस्कृतिक गीतों का अनुवाद और विश्लेषण के माध्यम से दूसरे समाज के लोगों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

‘Hindi Translation and Analysis of Kolam Tribes Cultureal Songs’

Research Scholour

Narmada Sanjaysingh Thakur

M.Phil. Translation Studies

Mahatma Gandhi Antarrashtriy Hindi University

Wardha-442005 Maharashtra (India)

thakurnarmada@gmail.com cell-+9665091906

Research summery

From ancient time there was a tribes in india. Tribals are living dasert, mountains and island. They have simple standard of living, food, drink, culture, outfits and language. Daily life of these people is simple. The main residance of kolam tribes are in board areas of Maharashtra and Andhra Pradesh. They are living in which district are yavatmal, chandrapur, gadhchiroli and nanded of maharashtra. Kolam is a tribe slugs because there is no subcart in these tribes. They depends on nature to fulfill their needs. Their all activities based on nature. They believes nature is god. They lived in forest and make their house, from bamboo, wood , grass, hunts using leaf. All the household material like mats, cribes, basket and rope are made by using naturally found things (or made by using wood, leaf, grass etc.) Putting tatoo is common in tribals so the tatoo is also common in kolam tribe. Some people make tatoo of their name, name and image of god and goddesses, the moon, the sun, basil, vridavan, gauri, bajarangbali, scorpions, tree vest, five women had taken milk etc. The kolam people believe in magic. There are persons who practice magic and black magic also. Mostely it is used against the enemy either for killing him or to disturb him.

There is no society without culture (or no society without culture). Because culture and society are complement to each other. Culture is born from society. Culture of kolam tribes are just like Hindu culture. All tribals culture is similar. But different from the culture of Hindu and Muslim. A some festivals are also different. Due to the exposure of hindus, they started celebrating the festivals of hindu. The main festival of kolam tribes is ‘Gaon Bandhani Festival’. All people are present in this festival celebration.

This festival is celebrated by singing a song. Songs are sing for to forget fatigue and suffering ailments. This singing is towards to Gods delights the suffering, obstacles and setbacks and happiness and peace. Their culture and festivals sing through the songs translated into another language is to bring. This research mark through their culture, their characteristics, their festivals and festivals songs will be used to convey through translation and analysis has been attempted.

Their culture and emotions. The aim of research is to bring. The facts of this tribes before society. We have to preserve the information of tribals of Anicent India.